काव्य हेतु का अभिप्राय एवं विभिन्न आचार्यों के मतों का उल्लेख

काव्य की उत्पत्ति का कारण है 'काव्य हेतु' कहलाता है। अर्थात व्यक्ति में काव्य रचना की सामर्थ्य उत्पन्न कर देने वाले कारण काव्य हेतु कहलाते हैं। अतः काव्य हेतु का सीधा-सादा अर्थ ऐसे साधनों एवं तत्वों से है जिनके कारण काव्य-सृजन सम्भव होता है। कवि भी पहले एक व्यक्ति होता है और बाद में कवि। उसके जीवन के मधुर और तिक्त अनुभव उसकी प्रतिभा और कल्पना का संस्पर्श पाकर महान काव्य-कृतियों में ढल जाते हैं। यही प्रतिभा और कल्पना आदि काव्य हेतु कहे जाते हैं।

भारतीय काव्य शास्त्र में काव्य हेतु पर पर्याप्त विचार किया गया है और तीन काव्य हेतु माने गये हैं — (i) प्रतिभा (ii) व्युत्पत्ति (iii) अभ्यास। इनमें 'प्रतिभा' सर्वप्रमुख काव्य हेतु है।

अग्निपुराण कहा गया है —

नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा।

अर्थात "लोक में नरत्व दुर्लभ है और उसमें विद्यावान नर होना दुर्लभ है। कवित्व परम दुर्लभ है और कविता करने की शक्ति (प्रतिभा) तो और भी दुर्लभ है।"

संस्कृत के काव्यशास्त्रियों ने अपने अपने विवेकानुसार काव्य हेतुओं का वर्णन किया है और इस दृष्टि से दण्डी, वामन, रुद्रट, कुन्तक और मम्मट आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

आचार्य दण्डी ने अपने ग्रन्थ 'काव्यादर्श' में प्रतिभा, आनन्द अभियोग (अभ्यास) और लोक व्यवहार एवं शास्त्रज्ञान को काव्य हेतुओं के रूप में मान्यता दी है।

"नैसर्गिकि च प्रतिभा श्रुतं च बहु निर्मलम
अमन्दश्चाभियोगश्च, कारणं काव्य-सम्पदः।"

आचार्य वामन ने अपने ग्रंथ 'काव्यालंकार सूत्रवृत्ति' में प्रतिभा को जन्मजात गुण मानते हुए इसे प्रमुख काव्य हेतु स्वीकार किया है —

"कवित्व बीजं प्रतिभानं कवित्वस्य बीजम"

वे लोक व्यवहार, शास्त्रज्ञान, शब्दकोश आदि की जानकारी को भी काव्य हेतुओं में स्थान देते हैं। आ० वामन के अनुसार लोक का आधार कला, दण्डनीति आदि विभिन्न प्रकार की विद्याएँ आती हैं। शब्दशास्त्र से शब्द शुद्धि अभिनीत होता है और शब्द कोश से शब्दों के अर्थों का सम्यक ज्ञान होता है। छन्दशास्त्र के ज्ञान से छन्द-प्रयोग से सम्बंधित शंकाओं का समाधान हो जाता है।

आचार्य भामह ने अपने ग्रंथ 'काव्यालंकार' में स्वीकार किया है कि गुरु के उपदेश से जड़ बुद्धि भी शास्त्र अध्ययन करने में समर्थ

हो सकता है, किन्तु काव्य तो किसी प्रतिभाशाली द्वारा ही रचा जा सकता है। भामह ने भी प्रतिभा को काव्य का प्रधान हेतु स्वीकार किया है।

आचार्य रूद्रट ने अपने काव्य ग्रन्थ 'काव्यालंकार' में प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास को काव्य हेतु स्वीकार किया है। उनके अनुसार प्रतिभाएँ दो प्रकार की होती है — सहजा अर्थात जन्मजात और उत्पाद्या अर्थात शास्त्रज्ञान, अभ्यास आदि के बल पर विकसित। इन दोनों की प्रतिभाओं में रूद्रट सहजा को अपेक्षतया अधिक श्रेष्ठ मानते हैं क्योंकि सहजा प्रतिभा ईश्वरप्रदत्त और जन्मजात होती है। उत्पाद्या आदि का विकास करना होता है और उसके लिए विद्वानों ने शास्त्रों का अध्ययन, लोकानुभव, सत्संग आदि उपाय बताएँ हैं।

आचार्य राजशेखर ने भी दो प्रकार की प्रतिभाओं का वर्णन किया है। कारयित्री प्रतिभा और भावयित्री प्रतिभा। कारयित्री प्रतिभा के बलपर ही कवि काव्य-सृजन कर पाता है। राजशेखर ने कारयित्री प्रतिभा को पुनः तीन उपभेद किये हैं — सहजा, आहार्या और औपदेशिक। सहजा प्रतिभा जन्मजात और ईश्वरप्रदत्त होती है जबकि आहार्या प्रतिभा का विकास शास्त्राध्ययन तथा अभ्यास आदि के द्वारा सम्भव होता है। भावयित्री प्रतिभा भावक अर्थात पाठक में निहित होती है और इसी प्रतिभा के बल पर वह काव्यानन्द को प्राप्त करता है।

आचार्य मम्मट ने अपने ग्रंथ 'काव्य प्रकाश' में काव्य हेतुओं पर विचार करते हुए लिखा है —

"शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥"

अर्थात काव्य के तीन हेतु है — शक्ति (प्रतिभा), लोकशास्त्र का अन्वेक्षण, तथा अभ्यास। शक्ति काव्य का बीज संस्कार है, जिसके अभाव में काव्य रचना सम्भव ही नहीं है।

आनन्दवर्द्धन ने अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिभा की सापेक्ष उत्कृष्टता सिद्ध की है। वाग्भट्ट ने भी प्रतिभा की सापेक्ष उत्कृष्टता सिद्ध करते हुए कहा है कि प्रतिभा तो अनिवार्य काव्य हेतु है। इनके पश्चात हेमचन्द्र ने अत्यंत स्पष्ट शब्दों में प्रतिभा की सापेक्ष उत्कृष्टता सिद्ध की है। जगदेव ने भी प्रतिभा की सापेक्ष उत्कृष्टता का भाव अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है। इस सम्बंध में उन्होंने लता का उदाहरण देते हुए कहा कि जिस प्रकार लता मिट्टी और पानी के संसर्ग से लता का रूप धारण करती है ठीक उसी प्रकार कवि-प्रतिभा भी व्युत्पत्ति और अभ्यास से युक्त होकर काव्य का रूप धारण करती है। आचार्य जगन्नाथ ने केवल प्रतिभा को ही काव्य हेतु स्वीकार किया है और व्युत्पत्ति तथा अभ्यास को प्रतिभा का कारण माना है।

उमेश कुमार